ORIGINAL RESEARCH PAPER

Education

KEY WORDS:

''सोचने समझने एवं समायोजन करने की क्षमता है बुद्धि''

अमित कुमार गुप्ता भाोधकत्ता, शिक्षा संकाय, टांटिया विश्वविद्यालयश्रीगंगानगर, राजस्थान।

लाखों वर्ष पूर्व जब पृथ्वी का निर्माण हुआ, तब कुछ आधारभूत गैसों की परस्पर संक्रियाओं से 'जल' एक जीव घटक के रूप में दृष्टिगोचर हुआ। पृथ्वी के निर्माण के साथ ही, जल की उपस्थिति से जहाँ 'जीव–जन्तुओं' का प्रादुर्भाव हुआ, वहीं प्राकृतिक सुरमयी, आनन्दमयी, मनोरम एवं मनोहोरी सौन्दृय का निमार्ण संभव हो पाया इसी प्राकृतिक वातावरण में कुदरत की अतुल्य कृति मानव का जन्म हुआ।

इस जगत में प्रकृति ने विभिन्न जीवों को अपने विकास हेतु सामर्थ्य एवं शक्ति प्रदान की है। वनस्पति जगत को जहाँ स्वयं भोजन बनाने की शक्ति प्रदान की, वहीं प्रकृति ने मानव को विचार शक्ति प्रदान की अपनी इस शक्ति के बल पर उसने समस्त भौतिक पदार्थो पर नियन्त्रण स्थापित किया है। पशुओं की तुलना में मनुष्य को कई ज्ञानात्मक योग्यताओं से नवाजा गया है। यही योग्यताएं मनुष्य को विवेकशील या बुद्धिमान प्राणी बनाती हैं। मनुष्य तर्क कर सकता है; समझ सकता है; भेद कर सकता है और नई स्थिति का सामना भी कर सकता है। निश्चित रूप से वह पशुओं से अपनी बुद्धि के कारण ही श्रेष्ठ है। परन्तु, सभी मनुष्य अपनी बौद्धिक क्षमताओं में विभिन्नताओं के कारण एक जैसे नहीं होते हैं।

जबसे मानव सभ्यता पनपी, उस समय से आज तक अर्थात् प्रागैतिहासिक या आदिकाल से आधुनिक काल तक मनुष्य ने नित नये कार्य करने की जिजीविषा को अपनी बुद्धि से शान्त करने का प्रयास किया है। कुछ नया करना ही विकास का प्रयाय है। नवीन सृजन की भूख ही विकास का मूल आधार है। कुछ नया करने की चाह ही विकास की और अग्रसर करती है। मानव अपनी सोच एवं बुद्धि के आधार पर नव सृजन में व्यस्त रहा और निरन्तर अपने प्रयासों से विकास के नये–नये आयामों को छूता चला गया। ये मानव का बौद्धिक बल ही है जिसके सहारे उसने आदिकाल में पहिया और आधुनिक काल में कम्प्यूटर का सृजन किया। मानव की बौद्धिक शक्ति के फलस्वरूप आज के समस्त कार्य मशीनी तीव्रता से सम्पन्न हो रहें हैं। मानव अपनी रचनात्मक प्रवृति एवं बुद्धि के बल से ही नित नई–नई खोज करता हुआ, अपनी सभ्यता का विकास करते हुए आज विकास के चरमोत्कर्ष बिन्दु पर पहुँच कर अन्य ग्रहों को अपने कब्जे में लेने का प्रयास कर रहा है।

व्यक्ति का दृष्टिकोण या नजरिया उसकी वैचारिक क्षमता एवं बुद्धि पर निर्भर करता है। सोच के अनुसार ही सकारात्मक एवं नकारात्मक छवि बनती है। इसी के आधार पर वह अपनी भीतरी क्षमताओं और दिमागी सक्रियता का इस्तेमाल करता है। जब क्रियाशीलता सकारात्मक हो 'दिमाग' स्वयं को ऊर्जावान महसूस करता है। सकारात्मक सोच व्यक्ति को ऊर्जावान बनाती है; प्रोत्साहित करती है; विवेकशील बनाती है और विवेकशील या बुद्धिमान व्यक्ति रचनात्मक होता है।

बालक अपनी मूल प्रवृतियों के साथ–साथ पैतृक गुण, वंशानुक्रम के साथ ही कुछ मौलिकताएँ लेकर पैदा होता है। वे मौलिकताएँ एवं मूल प्रवृतियाँ उसमें अन्तर्निहित होती है। शिक्षा द्वारा उन मौलिक विशेषताओं को प्रकट करने, तराशने तथा निखारने का काम किया जाता है। यही कार्य प्रकृति या विधाता द्वारा दिये बाल प्रतिभा के निरालेपन का सम्मान है। विचारशील अध्यापक, एक बालक में छिपी प्रतिभा एवं योग्यता को पहचानता है तथा उन्हें मूर्त रूप देने का प्रयास करता है। ये सब शिक्षा द्वारा ही सम्भव है। इसी सन्दर्भ में स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा है कि ''मानव की कल्पना, स्मृति, तर्क, चिन्तन, निर्णय आदि शक्तियों का विकास शिक्षा द्वारा होता है।''

बालक क्रिया द्वारा स्वयं करके सीखता है। बालक ऊर्जावान एवं क्रियाशील होता है। जिज्ञासु और ग्रहणशील होता है; सत्यनिष्ठ और कल्पनाशील होता है; तार्किक और सहज विश्वासी होता है; नई सूझ और नई सोच से युक्त अनूठा सृजक होता है। प्रत्येक बालक अपनी बौद्धिक क्षमता एवं बुद्धि–लब्धि के आधार पर अलग–अलग विशेषताओं को अपने अन्दर समेटे हुए होता है। प्रतिभाशाली, विवेकशील, बुद्धिमान बालक निश्चित रूप से किसी न किसी क्षेत्र में विशेष योग्यता रखता है, जरूरत होती है उस विशेषता को उसे रू–ब–रू करवाने की। वह क्षेत्र कोई भी हो सकता है, यथाः खेल का मैदान, प्रतियोगिता का आयोजन, शिल्पी का शिल्पगृह या फिर परीक्षा कक्ष। हर बालक किसी न किसी क्षेत्र में अग्रणी रहता है। प्रत्येक बालक अपनी बुद्धि के अनुसार रचनात्मक एवं सृजनशील होता है।

सृजनशीलता मानव का जन्मजात गुण होता है। जब भी उसे अवसर मिलता है, किसी न किसी क्षेत्र में नव–निर्माण अर्थात् नव–सृजन की ओर अग्रसर होने को लालायित रहता है। जब कोई वस्तु हमारे पास नहीं होती है तो उसे जादुई शक्ति से प्राप्त करने की निराली कल्पना करते हैं।

बुद्धि व विवके के द्वारा सृजनशीलता के साथ–साथ मानवीय गुणों का पता चलता है। सृजनात्मकता एक महान गुण है। उसे प्रकाशित करना एवं रंगमंच पर उकेरना एक सच्चे शिक्षक का दायित्व है।

बुद्धि का अभिप्राय हम व्यक्ति की उस योग्यता या क्षमता से लगाते है जिसके द्वारा वह अपने भले–बुरे की पहचान कर सके। दूसरे शब्दों में बुद्धि एक व्यक्ति की सामान्य क्षमता है जिसके द्वारा वह चेतनापूर्वक अपने विचारों को नवीन आवश्यकताओं के साथ समायोजित करता है।

बुद्धि की सुनियोजित परिभाषा देने हेतु सन् 1910में, 1921में व 1923ई. में विश्व के प्रमुख मनोवैज्ञानिकों की विचार गाष्ठी आयोजित की गई, जिसमें विभिन्न विद्वानों द्वारा की गई कुछ

परिभाषाएं –

वुडरो **(Woodrow)** – ''बुद्धि क्षमताएँ ग्रहण करने की क्षमता है।''
(Intelligence is the capacity to aequire capacity)

पिटनर **(pitner)** – ''बुद्धि नई परिस्थितियों के साथ समायोजन करने की योग्यता है।''
(Intelligence is the ability to adopt new situations)

टरमैन **(Terman)** – ''अमूर्त विचारों के बारें में सोचने की योग्यता ही बुद्धि कहलाती है।''
(Ability to think in terms of abstract ideas defines the degree of an individual's intelligence)

बर्ट **(Burt)** – ''बुद्धि अच्छी तरह निर्णय करने, समझने तथा तर्क करने की योग्यता है।''
(Intelligence is the ability to judge well to comprehend well and reason well)

मैकडूगल **(Mc dougall)** – ''बुद्धि जन्मजात प्रवृतियों को पूर्वानुभवों के प्रकाश में परिमार्जित करने की क्षमता है।''

इस प्रकार हम बुद्धि को एक ऐसी मानसिक योग्यता मान सकते हैं जो नई परिस्थितियों के साथ समायोजन करती है; उच्च विचारों को जन्म देती है तथा पूर्वानुभवों से ज्ञानार्जन करती है।

बुद्धि के बारें में जो भी कुछ चर्चा हमने की है उसकी सहायता से हम इस बात को समझ सकते है कि बुद्धि किस प्रकार काम करती है ? किस प्रकार का व्यवहार व्यक्ति को 'बुद्धिमान' या 'बुद्धिहीन' बनाता है ? परन्तु इससे इस बात की व्याख्या नहीं होती है कि बुद्धि का ढाँचा क्या है ? अर्थात् बुद्धि में कौन–कौन से तत्व सम्मिलित हैं ? मनोवैज्ञानिकों द्वारा समय–समय पर प्रस्तुत किये गये बुद्धि संबंधी सिद्धान्तों द्वारा इस प्रश्न का उत्तर देने प्रयास किया गया है।

घटकों या खण्ड़ों के आधार पर बुद्धि के निम्नलिखित सिद्धान्त उपलब्ध हैं :–

1. बिने का एक तत्व सिद्धान्त,
2. स्पीयरमैन का द्वितत्व सिद्धान्त,
3. थार्नडाइक का बहुतत्व सिद्धान्त,
4. थर्स्टन का समूह तत्व सिद्धान्त,
5. थामसन का प्रतिदर्श सिद्धान्त,
6. वनर्न का पदानुक्रमित सिद्धान्त,
7. गिलफोर्ड का संक्रिया–उत्पादन सिद्धान्त,

<u>बुद्धि–लब्धि का वर्गीकरण</u>

बुद्धि–लब्धि (I.Q.)	बुद्धिमता का स्तर (Level of Intelligne)
140 और उससे ऊपर	प्रतिभाशाली (Gifted of Genius)
120–140	प्रखर बुद्धि वाला (Very Superior)
110–120	औसत से अधिक (Supeior)
90–110	औसत या सामान्य (Normal or Average)
75–90	सीमा पर / अल्प बुद्धि (Dullness)
50–75	मूर्ख (Morons)
25–50	मूढ (Imbecile)
25 से कम	महामूर्ख / जड़ बुद्धि (Idiot)

इस बात में कोई दो साय नहीं है कि आयु के साथ–साथ व्यक्ति की बुद्धि बढ़ती है। परन्तु इसके साथ–साथ सम आयु वाले व्यक्तियों की आयु भी बढ़ती है। इसलिए बुद्धि–लब्धि जो किसी व्यक्ति की अपेक्षाकृत प्रतिभा, सम्पन्नता या बौद्धिक योग्यता का परिचय देती है। व्यवहारिक रूप से एक रहती है। साधारण स्थितियों में दुर्घटना या बिमारी को छोड़कर व्यक्ति की बुद्धि–लब्धि समस्त जीवन एक ही रहती है।

बुद्धि–लब्धि के इस तत्व को मनोवैज्ञानिक बुद्धि–लब्धि की निरन्तरता कहते हैं।

अतःएव हम कह सकते हैं कि जिस युक्ति या प्रक्रिया के माध्यम से जीव अपने भले–बुरे की पहचान करता है, 'बुद्धि' कहलाती है।